

DPN 5602

Title: गीत गोविन्दया चूं म्ये SĪTĀ GOVINDAYĀ CHUN ME

Run. No. 6293

Cat. No.

Micro. No.

Subject Song गीत/४

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 17. ~~7~~ 7.5 Folios 8 Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act / Sarga extant 5, 6, 10, 11

Author / translator Jayadeva जयदेव

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material: palmleaf / paper / thyaṣaphu /

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

किं विना मां कुरु मम वचनं सत्त्वज्जन्तुनं यजय मधुप्रियका मं ॥ ५ ॥ श्रीगुरुः
 यदवकुरुतु त्रिमधुरुधुप्रियजमनमधीयं । यमदिरुद्धयं रुद्रि ममि सद्यं न
 मरुमरुतकमनीयं ॥ ५ ॥ ४ ॥ ॥ किं प्रीती गता विन्द सा कां कुरु यं तु नीका कानाः
 मयं वमः सग्नः ॥ ५ ॥ ५ ॥ ॥ नाटनागः ॥ नयकतात् ॥ यथ किं दिशि दिशि नरुमि
 रुवकं । त्वदधनमधुनमधुनियिवकं ॥ नाथ रुनसीद किना धावा सगुरु ॥ ५ ॥
 त्वदलिमनघनरुसतवलकी । यरुकि यदनि कि यरुवलकी ॥ ५ ॥ विदित

विसदविसकिसलयवलय। जीवनीयत्रमिरुतवत्रकिलया ॥ ५ ॥ मरु
 तवलाकितमधुनलीला। मधुनियत्रमिरुतवतगीला ॥ ६ ॥ त्रिभुवनेतिन
 कथमरिसात्रं। त्रिभुवनेतिवदकिसखीमनवात्रं ॥ ७ ॥ शिष्यातिवममिजलध
 नकन्या। त्रिभुवनेतिवदकिसखीमनवात्रं ॥ ८ ॥ रुवमिदिलमिनिविगलित
 नजा। वितयतिवदकिसखीमनवात्रं ॥ ९ ॥ श्रीजयदवकवत्रिदमदितां। त्रिभुवने
 नन्याममिमदितां ॥ १० ॥ ॥ त्रिभुवनेतिवदकिसखीमनवात्रं ॥ ११ ॥

वेकान्नामवद। मरुतवलाकितमधुनलीला। मधुनियत्रमिरुतवतगीला ॥ ५ ॥ त्रिभुवनेतिन
 कथमरिसात्रं। त्रिभुवनेतिवदकिसखीमनवात्रं ॥ ६ ॥ शिष्यातिवममिजलध
 नकन्या। त्रिभुवनेतिवदकिसखीमनवात्रं ॥ ७ ॥ रुवमिदिलमिनिविगलित
 नजा। वितयतिवदकिसखीमनवात्रं ॥ ८ ॥ श्रीजयदवकवत्रिदमदितां। त्रिभुवने
 नन्याममिमदितां ॥ ९ ॥ ॥ त्रिभुवनेतिवदकिसखीमनवात्रं ॥ १० ॥

यदीरुत्रिविजदहनवहननमदधर्ष॥ ५ ॥ कसमसकमानननननीलया
 मुगतिरुदिरुकिमामतिविषमनीलया॥ ५ ॥ अरुमिरुकिनिवसामिनगतिरुव
 रुवतसा। सत्रमिमधुसूयनामामयिनवतसा॥ ५ ॥ रुत्रिवप्रधधनधजयदवक
 विरुत्रनी। वसतुदुदियवतिनिवकामलकसावनी॥ ५ ॥ ५० ॥ रवमकत्रागा॥
 नकतालीनात्र॥ सत्रसमत्रावितवित्रवितवशा। गतिरुकसमरुत्रविलसितक
 शा॥ कायिमधुत्रियुषा। वितसमियवतित्रधिकगुषा॥ ५ ॥ रुत्रियत्रिवरुधवः

लितविकात्रा। कवकल। आयत्रितरलितरुत्रा॥ ५ ॥ विचलदलदलसितान
 नवद्या। नदधनयानत्ररुमरुतनद्या॥ ५ ॥ वधलककुलचलितकयाला। म
 खत्रितनसनघनगकिलाला॥ ५ ॥ दयितविलाकिगलकिरुमिता। वरुविध
 कूजितनमित्रमत्रमिता॥ ५ ॥ वियलयलकयथयरुसा। श्वमितनिमीलितविक
 सदनसा॥ ५ ॥ यमजलकधरुत्रमरुगभत्रीना। यत्रियमितात्रमित्रकित्रधधी
 ना॥ ५ ॥ श्रीजयदवरुधितरुत्रिमिरा। कलिकलवजुनययुयत्रिमिरा॥ ५ ॥

॥ ३६ ॥ ॥ शुक्रजीनाग ॥ नकतालितान ॥ समदितमदनत्रमधीवदनचमनच
लितधनामगमदकिलंकलियकिसयूलकंसगमितत्रजनीकन ॥ त्रमकयमताय
नालितवत विजयीमत्रात्रिधना ॥ ५ ॥ घनययत्रवित्रत्रयकिदिकनन
लितकत्रधानन। कत्रवककसमंत्रयलाससमंत्रयकिमगकानन ॥ ५ ॥ घटयटि
सूचनकचयगगगतमगमदत्रित्रिधिका। मधिसत्रममलंतात्रकयटलन
खयदमधिरूधिका ॥ ५ ॥ कितविसनकलमदरुजयगलकनरलनलिनी

दत्तामत्रकतवल्यं मधूकत्रनिचयं चित्तत्रिदिमगीकल ॥ ५ ॥ अतिगुरुचनः
 वियुलायचनमनमिजकतकासनाममिमयत्रमनंतात्रधकसनं चिकित्तकुरुवा
 सन ॥ ५ ॥ अत्रधकिसलथकमलानिलथनखमधिगधयुजितावरुनयचत्रधंया
 वकरुमधंजनयकिद्विधाजिता ॥ ५ ॥ अमयकिसरुमझामयिसरुमंखलरुलः
 अत्रसादनाकिसरुलमवर्मत्रिमिरुवित्रसंवदसयिविठयादत्र ॥ ५ ॥
 वरुजसरुधनकुरुद्विगुधनमधूत्रिययदमवकाकलियगवत्रिमंनविमकु

इति मं क वि नृ य ऊ य द व क ॥ ५ ॥ ७० ॥ ॥ द जा ख त्रा ण ॥ नृ य क ता ले ॥ अनिल क
न ल क व ल य न य न न ॥ क य कि न सा कि स ल य ध य न न ॥ स खि या न मि ता व न मा
सि ना ॥ ५ ॥ वि क सि क स न मि ऊ ल लि क म ख न ॥ लू य कि न सा म न सि ऊ वि गि ख न
॥ ५ ॥ अ म रु म ध न रु त्र म द व व न न ॥ क ल कि न सा म ल य ऊ य व न न ॥ ५ ॥
लू ल ऊ ल नू रु त्र वि क त्र व न ध न ॥ क य कि न सा दि म क त्र कि त्र ध न ॥ ५ ॥ स ऊ
ल ऊ ल द स म द य न वि त्र धा द रु कि न सा रु दि वि त्र रु ध ॥ ५ ॥ क न क नि रु व न

धयहृत्रिमयिनिगदिरुनीसं॥ ५ ॥ श्रीकृष्णयदववतनमध्वरीकृतदात्रमदासि
कत्रामं॥ ६ ॥ त्रिविदितिरुमनसामध्विनिगदिरुनीसं॥ ५ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ त्रिविदितिरुमनसामध्विनिगदिरुनीसं॥ ५ ॥ ॥ ॥
धवसमियंमिदवित्समत्रमित्ररुमरुसिगदवत॥ ५ ॥ नवरुवद॥ ॥ ॥
गयनसात्र॥ ५ ॥ त्रिविदितिरुमनसामध्विनिगदिरुनीसं॥ ५ ॥ ॥
कूमसवयत्रवितरुनवात॥ ५ ॥ त्रिविदितिरुमनसामध्विनिगदिरुनीसं॥ ५ ॥ ॥

सकृमात्रदद॥ ५ ॥ यत्रमलयवनयवनसुत्ररुनीसं॥ ५ ॥ त्रिविदितिरुमनसामध्विनिगदिरुनीसं॥ ५ ॥ ॥
मीयमिदवित्समत्रमित्ररुमरुसिगदवत॥ ५ ॥ नवरुवद॥ ॥ ॥
कत्रामं॥ ५ ॥ त्रिविदितिरुमनसामध्विनिगदिरुनीसं॥ ५ ॥ ॥ ॥
मध्वरुसयिकत्रनितदमुखत्र॥ ५ ॥ त्रिविदितिरुमनसामध्विनिगदिरुनीसं॥ ५ ॥ ॥
नृद्विविदितिरुमनसामध्विनिगदिरुनीसं॥ ५ ॥ त्रिविदितिरुमनसामध्विनिगदिरुनीसं॥ ५ ॥ ॥
धवसमीयमिदवित्समत्रमित्ररुमरुसिगदवत॥ ५ ॥ नवरुवद॥ ॥ ॥

समाज कर्ममन्त्रमङ्गलगतानिरुधतिजयदवकवित्राजत्राज ॥ ॐ ॥
 एवत्राजिनाग ॥ नयकताज्ञ ॥ राधावदनविसाकनविससितविधिविकानवि
 रुझं जलनिधिमिवविधुमं गुणयर्जननरुनिरुधुननरु ॥ ५ ॥ रुत्रिमकन
 संवित्रमरिसखिरुदिसासं ॥ सादयर्नगुत्ररुधवधम्वयवदनमनरुनिकाशं ॥
 ६ ॥ सात्रममसकत्रगात्रमृत्रसिदधर्गयकिसम्वविद्वत्रा ॥ स्फुटनरुधकदच
 कत्रम्वितमिवयमृनाजलयुत्रं ॥ ७ ॥ ग्यामसमृदसकसवत्रमं गुलमधिगत

गोत्रदहूनीनीसनसिनमिवयीतयत्रागयठलरुत्रवसयितमसं ॥ ८ ॥ कत्र
 लदगधलवसनमनादत्रवदनजनिनरुकिनागं ॥ स्फुटकमसादत्रखलितखज
 नमिवगत्रदितनागं ॥ ९ ॥ वदनकमलयत्रिभीलनमिसिनमिदित्रसमकु
 लगारुं ॥ स्मितत्रविक्रुसमसमन्त्रसिताधत्रयन्नवककत्रकिसारुं ॥ १० ॥ गमिकि
 वधकृत्रिगायत्रजसधत्रसन्धत्रसकसमकधं ॥ किमिनादितविधुमं गुलनिर्मल
 मलयजकिलकनिवधं ॥ ११ ॥ वियसयसकरुत्रदनुत्रिकं नरुकि कलिकसारुत्रः

धीत्रं।महिगधकित्रघसमृदसमृदलरुघधगुरुगधत्रीं॥ ५ ॥ श्रीऊयद
 वरुधिरुवद्विगुधीरुगुरुघधरात्रं।यधमरुद्विनिनिभयरुत्रिसयित्रं
 सुरुगधयमात्रं॥ ५ ॥ ॥ ॥ किशीगीरुगविन्दमानन्द।गविन्द।नाम।काद
 न।समर्न॥ ॥ ॥ ॥ विरामराग॥ युकिम०।नाम॥ किमनयधयनरुलकनमा
 निनिवनधकमलविनिवर्ग।नवयदयनववेनियत्रारुवमिदमनरुवकुसव
 र्ग॥ कधमधनानात्रायधमनगमनसत्राधिक॥ ५ ॥ कत्रकमलनकत्रा

मित्रत्रसमृदमागमिगविद्वनं।कधमयकनगयनायत्रिसामिवनयत्र
 मनगमसत्रं॥ ५ ॥ वदनसधनिधिगसिगममरुमिवनवयववनमनकल
 वित्ररुमिवायनयामिदयाधत्राधकमत्रसिदकलं॥ ५ ॥ प्रिययत्रिनरु
 धनरुसलसिगमिवयूलकिगमकिद्वनवायं।मद्वनसिकुत्रकलगंविनिव
 धयमत्रयमनसिऊगायं॥ ५ ॥ मधनसधत्रसमयनयरुविनिजीवयमन
 मिदयासं।त्वयिविनिहिरुमनसंवित्रराननदधवयूषमविनासं॥ ५ ॥